वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

जनवरी - 2019

महोत्सव मुबारक

नया साल मुबारक हो

जब तक यह पत्रिका आप तक पहुंचेगी नया वर्ष चढ़ चुका होगा । हम सब पाठकों को नये वर्ष की बहुत-2 शुभकामनाएं भेज रहे हैं। यह वर्ष हम सबके लिए हमारी शारीरिक, मान्सिक वा हार्दिक उन्नति लाने वाला हो । आप सब का धन्यवाद कि पिछले साल की पत्रिकाओं के विषय में आपके पत्र व टैलीफोन मिलते रहे हैं। लेखों ने आपको बहुत प्रभावित किया है, और कई पाठकों ने यह भी कहा है कि वह पत्रिका को कम से कम दो बार जरूर पढ़ते हैं और कई लेख कई बार पढ़ते है। गुरू महाराज की बहुत कृपा है कि हम तुच्छ कुछ पत्रिका के द्वारा उनका सन्देश आप तक पहुंचा सके हैं। हमारी ऐसी कामना है कि आने वाले वर्ष में हम और भी उत्साह के साथ और लाभदायक लेख आपकी सेवा में प्रस्तुत कर सकें। आपके विचार हमारे लिए उत्साह प्रद होते हैं।

हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि पश्चिमी सभ्यता ने इतना गहरा रंग चढ़ा दिया है कि नये वर्ष का आरम्भ डिस्को, डान्सों, शराबों, नशों और उनके द्वारा और कुकर्मो से शुरू होने लगा है। फिर शराब के नशे में बड़े-बड़े प्रण लिए जाते है, जो सुबह होते ही काफूर हो जाते हैं।

हम परम पूजनीय भगवान के सेवक होकर इस नये वर्ष में अपने शारीरिक, मान्सिक और अध्यात्मिक विकास के लिए अच्छे प्रण लें। व्यायाम, सैर, अच्छी किताबें पढ़ना और विशेष रूप से परम पूजनीय भगवान द्वारा रचित पुस्तकों का पाठ करना अपने जीवन का नियम बनाएं। परम पूजनीय भगवान ने इन ग्रन्थों को खूने जिगर से सींचा है। वह बहूमूल्य सत्य और तत्व हमें प्रदान किए हैं जो अमीर से अमीर, उच्च पदधारियों के नसीब में नहीं हैं। यह बहूमुल्य सत्य हमें मुफ्त की तरह मिलते हैं। उनका लगातार अध्ययन हमारे जीवन को नया मोड़ दे सकता है। यह नया साल हमें यह Warning (चेतावनी) भी देता है कि हमारी जिन्दगी का एक और वर्ष कम हो गया, इसी प्रकार वर्ष बीतते रहेंगे और हमारा अन्त निकट आता जाएगा । वैसे जिन्दगी का पल का भी भरोसा नहीं। हम सबके लिए ऐसी कामना है कि हम हर वर्ष कुछ विकास की ओर कदम बढ़ाएं। कुछ सेवा के प्रण लें। परम पूजनीय भगवान की आशाऐं तो बहुत ऊँची हैं, परन्तु हम उस ओर कुछ तो कदम बढ़ाएं। अपने उपकारियों को याद करें , उनके लिए और अधिक सेवाकारी हों। चारों जगतों की कुछ न कुछ सेवा प्रतिदिन करें। हमारी ऐसी कामना हम सबके लिए है। मैं भी इस ओर गहराई से सोच विचार कर सकूं और अपने भले के मार्ग पर पड़ संकू । आप सबके लिए भी ऐसी कामना है। यदि आप में से कोई अच्छा प्रण ले, उसे हमें लिख सकते है, ताकि आपको और प्रोत्साहन मिल सके।

बहुत-2 शुभ कामनाओं के साथ

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 31 अंक 12
जनवरी – 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

महोत्सव मुबारक 2018

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी संस्थापक देव समाज और देव धर्म का 168वां मुबारक शुभ जन्म महोत्सव देवीनगर नजदीक डेराबस्सी (चण्डीगढ़) में पिछले सालों की तरह बढ़े चाव-चाव के साथ 21 दिसम्बर 2018 से 24 दिसम्बर 2018 तक मनाया गया।

इस पावन पर्व के मनाने के लिए ढेर सारी तैयारियाँ की गई और करवाई गई। महोत्सव हाल जो बारिश की वजह से कई जगह से खराब हो गया था, उसमें मुरम्मत और पेंटिग का काम करवाया गया और छत भी ठीक करवाई गई। उसके बाद बहुत संग्राम करके श्रीमान जगदीश जी ने बिल्कुल आधुनिक ढंग से सारे हाल की डेकोरेशन करवायी उसके बाद भगवान देवात्मा की पावन छवि को सुन्दर तरीके से बनवाया, जिसके अन्दर रोशनी आकर उसे जगमगाती थी, जो बहुत ही सुन्दर दिखाई देती थी। महोत्सव में छवि रखने का स्टेज और आसन भी पालिश करवाया गया। इसके बाद उच्च आत्माओं के फोटो और बीसीयों विजय पताका और मोटोज पूरी तरतीब से लगाये गये। जगदीश जी के बेटे, पुत्रवधु और पोते और दोहते ने ऊपर सजावट और सुन्दर कागजी फूलों से सारे हाल की बहुत सुन्दर सजावट की। सारे परिवार ने बहुत मेहनत की। फूलों के बहुत से गमले तैयार किये हुए चण्डीगढ़ से धर्म सम्बन्धियों के घर से लेकर पहुँचाए गये जो स्टेज के ऊपर और नीचे लाईनवार रखे, स्टेज की शोभा बढ़ा रहे थे। कुछ कमरों के फर्श भर्ती डालकर ऊँचे किये गये। पानी के लिए विशेष प्रबन्ध और विशेष प्रकार के फिल्टर लगाये गये। इनके लिए विशेष टंकियाँ और जरूरी सामान लाया गया। सारे कमरों की सफेदी वगैरह करवायी गयी एक नया जैरनेटर बिजली चले जाने पर सहायक होने के लिए सुखदेव जी ने लगवाया, उन्होंने और बहुत से खर्चे भी किये।

सुबह चाय नाश्ते से लेकर दोपहर और रात्रि

के भोजन तक की सुविधा के लिए खास हलवाई पार्टी का प्रबन्ध किया गया। सभी धर्म सम्बन्धियों व यात्रियों के लिए भोजन आदि की सब सुविधा नि:शुल्क रखी गयी। यह सारा प्रबन्ध बहुत उत्तम रहा। अधि काँशत: यात्री बहुत सन्तुष्ट रहे। सारे आँगन को झण्डों और बिजली की लड़ियों द्वारा सजाया गया। पूजनीय भगवान रचित 9 पुस्तकें और एक अन्य पुस्तक रिपरिन्ट कर उपलब्ध कराई गयी। पाठकगणों के लिए किताबों की बहुत लम्बी स्टाल लगाई गयी। यात्रियों की सुविधा के लिए दूध-चाय के लिए स्थानीय कैंटीन में उचित प्रबन्ध किया गया।

एक दिन पहले श्रीमान जगदीश जी की सहायता के लिए श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना व गोपाल जी भी पहुँच गये थे।

सभी रिहाईशी कमरों की सफाई धुलाई आदि करके उनमें चारपाईयाँ व अन्य बिछाई व बिस्तर आदि भी लगाये गये।

अन्य अनेक धर्म सम्बन्धी भी अच्छे भावों से सेवा-सहयोग करते रहे। पानी गर्म करने की सेवा में सदा की तरह श्रीमान बूटा सिंह जी व श्रीमान मधुसूदन जी, घंटी बजाने व किताबों की स्टाल में भी सदा की तरह श्रीमान ओम प्रकाश वर्मा जी सक्रिय रहे। नाश्ता-भोजन आदि परोसने की सेवा में श्रीमान अनिल जी व मल्लेंका की पार्टी सहयोग देती रही। गंगानगर से श्रीमान अशोक जी व नमन जी का परिवार व सुखदेव जी गोनियाणा भी अच्छे सहायक हुए।

इस पावन पर्व पर एक दिन पहले ही यात्रीगण आने शुरू हो गये थे। डा० जैरथ जी देहरादून से धर्मपत्नी सहित 20 तारीख को पहुँच गये, रात्रि को मेरठ से नरेन्द्र जी व 21 तारीख सुबह गज सिंह पुर और श्री गंगानगर से धर्म सम्बन्धी पहुँच गये।

प्रवेश सभा से पहले सारा आश्रम एक नई दुल्हन की तरह सज गया था और नया नजारा पेश कर रहा था।

यात्रियों की आमद का दृश्य बड़ा ही सुन्दर था। चण्डीगढ़, पँचकूला आदि लोकल स्थानों के अतिरिक्त यात्री पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, यूपी, उत्तराखण्ड आदि से नीचे लिखे स्थानों से 21 दिसम्बर को पधारने लग गये। सभा के समय दर्जन से ऊपर कारों और बस, स्कूटरों, थ्री व्हीलरों आदि का जमघट देखने लायक था।

पंजाब में समराला, पटियाला, लुधियाना, संगरूर, भटिंडा, कल्याण, गोनियाणा मण्डी, दड़बा।

हरियाणा से अम्बाला, जमनानगर, मल्लेंका, केसूपुर, ढाणी, पंचकूला, रोहतक, गुड़गांव।

राजस्थान से श्री गँगानगर, पदमपुर, गजसिंहपुर। यूपी से मेरठ व उत्तराखण्ड से देहरादून व दिल्ली से यात्रीगण अच्छी संख्या में पधारे।

21.12.2018 प्रवेश सभा सांयकाल 4.30 बजे :- सभापति श्रीमान डॉ० C.S. जैरथ जी ने देव स्तोत्र की व्याख्या की और भगवान देवात्मा के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना की कि हमारा यह देव महोत्सव निर्विघ्न सफल हो। उनकी कृपा और उच्च कर्मचारियों व सहायकारी शक्तियों से हृदयगत भावों के साथ सहाय-प्रार्थना की। इसके बाद सभापति जी ने फरमाया कि आम तौर पर बड़े-2 लोगों का जन्मदिन मनाया जाता है, भिन्न-भिन्न प्रकार के समारोह व गोष्ठीयाँ होती हैं। स्कूलों में छुट्टियाँ की जाती है, आफिस बंद हो जाते है और कुछ लोग भाषण वगैरह भी देते हैं। बाकी कई लोग मटर गशती करते हुए दोस्तों, मित्रों व पारिवारिक जनों के साथ दिन बिता देते हैं और फिर अगले ही दिन से सब कुछ भूल जाते हैं। हर साल सब जन्मदिन ऐसे ही निकल जाते हैं।

क्या हम धर्म सम्बन्धी भी ऐसा ही आचरण करते हैं, क्या हम जिन्दा सेवक हैं, भगवान देवात्मा व उनके मिशन के? इस पर हमें विचार करना पड़ेगा। हम धर्म सम्बन्धी अगर थोड़ा बहुत भगवान देवात्मा और उनके मिशन के प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता का भाव रखते हैं। उनके द्वारा हमारे पर जो-जो उपकार हुए हैं, उनको महसूस करते हैं तो हमें वह ऋण समझ कर देवधर्म को दुनिया में फैलाने के लिए हर सम्भव तरीके से इस मिशन के साथ अपने आप को जोड़ना होगा। इससे दूसरों के भले के साथ-साथ अपना भी भला होगा। जो-जो भगवान के मिशन के साथ जुड़ा है, उसका भला हुआ है। सभापति जी ने कुछ धर्म सम्बन्धियों के बारे में बताया जिनके जीवन में आर्श्चजनक परिवर्तन आए। उन्होंने आगे कहा कि यह एक relay race है अपने से अगले वाले तक जी जान लगाकर भगवान का संदेश आगे पहुँचाना है और देव धर्म मिशन को आगे बढ़ाना है। इसके लिए सम्पूर्ण समर्पण की जरूरत है। यही हमारे जिन्दा सेवक होने की निशानी है। इस समर्पण के रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट है हमारा अहंम भाव। इसके रहते धर्म जीवन में प्रवेश पाना व धर्म का काम करना सम्भव नहीं है। एक अहंकारी मनुष्य धर्म जीवन पाना तो दूर उसमें प्रवेश तक नहीं कर सकता और उसके लिए अपना व दूसरों का नुकसान करना लाज़मी बात है। इस तथ्य को कई उदाहरणों द्वारा बतलाया और आगे कहा कि जब हम भगवान देवात्मा के चरणों में अपने आपको समर्पित कर देंगे तो उनके आर्शीवाद से उनके बताए हुए रास्ते पर चलकर, उनकी ज्योति और शक्ति पाकर अपनी आत्मा का सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और उसकी रक्षा कर सकते हैं। नीच अनुरागों व घृणाओं के कीचड़ से निकल कर उनसे सच्ची मुक्ति पा सकते हैं। इस सच्चाई को उन्होंने एक शहर व गाँव की कहानी का उदाहरण देकर समझाया।

अगर हम अपने गुरू के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के सूत्र से जुड़ पाऐंगे तो हम उनकी ज्योति व शक्ति पाकर अपनी आत्मा को मरने से बचा सकते हैं। इसके लिए हम उच्च कर्मचारियों व धर्म

सम्बन्धियों की संगत व उनकी सत्संग-सभाओं में भाग लेकर अपने नीच अनुरागों व नीच घृणाओं से छुटकारा पाने के लिए मदद पा सकते हैं और उच्च व सार्थक जीवन की तरफ अपने कदम बढ़ा सकते हैं। और इसे भी आगे अपनी आत्मा की निर्माणकारी शक्ति को बढ़ाने के लिए कोई परोपकार के काम में जुड़ जाएँ क्योंकि इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है।

सबसे बड़ा परोपकार का काम है भगवान देवात्मा के सन्देश को औरों तक पहुँचाना और खुद उनके बताए हुए रास्ते पर चलना। इसी में ही अपना सच्चा भला ओर दूसरों की सच्ची सेवा है।

इसके बाद महोत्सव के आने वाले दिनों के लिए शुभकामना की कि यह हम सब के लिए प्रेरणादायी व लाभकारी सिद्ध हो और हम सब यहाँ से नई ऊर्जा और उत्साह लेकर जाएँ।

इसके बाद श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने महोत्सव के बारे में व पूजनीय भगवान देवात्मा के आविर्भाव और उनके उच्च लक्ष्य के बारे में कुछ शब्द कहे। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने देव समाज क्या है और इसकी जरूरत क्यों है, इसके बारे में बताया। आगे बताया कि प्रकृति के रहस्यों को जानने के लिए साईंसदानों ने बहुत संघर्ष किये, अपनी जानें तक गंवाई। इसी तरह भगवान देवात्मा का आर्विभाव नया ज्ञान व शक्तियाँ लेकर आया है जो सदियों तक किसी ने नहीं किया व दिया है। भगवान देवात्मा ने इस सत्य को उजागर किया है कि हमारे वजूद में असल चीज़ आत्मा है। वह क्या है व कैसे बनता व बिगड़ता है। इसी प्रकार ही अपने आप को जानना, अपनी आत्मा के असली रूप को जानना व पहचानना, अपने नीच भावों से छुटकारा पाना और उच्च भावों व शक्तियों को विकसित करना यही भगवान देवात्मा का और देवसमाज का मुख्य लक्ष्य और कारज है।

अन्त में श्रीमान जी ने महोत्सव पर सब जनों की डयूटियाँ बताईं और सभा की समाप्ति की गई।

22.12.2018 – 9.30 बजे सुबह :–

सभापति :– श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

विषय – परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवन-दायक सम्बन्ध।

अर्चन, देव स्तोत्र, प्रार्थना के बाद विनोद जी (गायक) द्वारा ही "परम अवश्यक जीवन-दायक मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन का गान किया।

सभापति जी ने बहुत ही दीनता-पूर्वक प्रार्थना की और फिर बताया कि इस विषय के साथ न्याय करने के लिए विशेष विद्वान, उच्च जीवनधारी, त्यागी और साधक व्यक्ति की आवश्यकता है, इससे अपना आप खाली अनुभव होता है।

सभापति जी ने बताया कि हमारा सारा जीवन, जिसमें वनस्पति, पशु जगत भी शामिल हैं, सम्बन्धों पर निर्भर है। यह पृथ्वी जिसे लोग धरती माता भी कहते हैं, सब पशुओं, वनस्पति वा मनुष्य जगत का

आवश्यक सम्बन्धी है। धरती नहीं तो किसी जीव जन्तु की कल्पना भी नहीं की जा सकती। सूर्य की रोशनी वा ताप पर सब जगत निर्भर करते हैं। कोई मनुष्य कितना महान हो, परन्तु यदि सूर्य की रोशनी न हो ता आँखों के होते हुए भी नहीं देख सकेगा। इसलिए सूर्य हमारा परम उपकारी सम्बन्धी हैं। हवा में आक्सीजन, नाईट्रोजन और भी कई कुछ है, परन्तु यदि आक्सीजन न हो तो हम जिन्दा नहीं रह सकते, कोई पशु, पौधा भी जिन्दा नहीं रह सकता। यदि कोई आदमी बेहोश हो जाता है, तो उसके प्राण कई बार केवल आक्सीजन से बच जाते हैं। सब अंग और रक्त होते हुए भी आक्सीजन का होना जिन्दा रखने के लिए परम आवश्यक है। फिर सभापति जी ने पानी पर मनुष्य की निर्भरता बताई, पानी भी हमारा परम आवश्यक सम्बन्धी है।

इससे आगे मात-पिता के जन्मदाता रूप का ब्यान करते हुए बताया कि बच्चे का जीवन उसके माता-पिता की देन है, किसी देवी देवता का नहीं। प्रत्येक आत्मा एक नये जीवन का आरम्भ करता है, कोई आवागमन वा पुर्नजन्म सम्भव नहीं, माता पिता हमारे परम आवश्यक सम्बन्धी हैं, इससे कोई इन्सान इन्कार नहीं कर सकता।

अब प्रश्न पैदा होता है कि वह कौन सा जीवन है जो परम पूजनीय भगवान देवात्मा प्रदान करते है? हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि उस जीवन के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सम्बन्ध क्यों परम आवश्यक है।

हमारे अस्तित्व में शरीर के इलावा हमारी जीवनी शक्ति भी है। यह शारीरिक जीवन से परम आवश्यक है। उस जीवनी शक्ति या आत्मा की कुछ समझ आ सकती है कि यदि यह सच्चाई समझ आ जाए कि आत्मा शरीर का निर्माता हैं शरीर आत्मा का निर्माता नहीं। शरीर में आत्मा कहीं और से नहीं आती। आत्मा शक्तिमय है। शक्तियां गठन रखती हैं। इनमें सुख शक्ति गठन निर्माणकारी शक्ति है। सभापति जी ने गेहूं के दाने के उदाहरण द्वारा शरीर निर्माणकारी शक्ति को समझाया। इसके आगे मनुष्य की परिचालक शक्तियां उसके सुखों के प्रति आकर्षण या भाव हैं। जिनका ज्ञान परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति के द्वारा होता है। इन्हें सुख अनुराग कहते हैं। इनमें नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं इसका नाश करती हैं। उसकी रक्षा केवल उच्च सात्विक शक्तियों के विकास से होती है। नीच सुख अनुरागों से मोक्ष और उच्च भावों के विकास करने की क्षमता केवल भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में है। विश्व में कोई भी हस्ती यह कार्य करने में असमर्थ्य है।

फिर उन्होंने तीन भूतपूर्व महान हस्तियों के जीवन की विशेष घटनाओं का वर्णन किया। श्रीमान बुद्ध सिंह जी, श्रीमान राम सिंह जी और श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी, इन जनों के जीवनों में देवात्मा के सम्बन्ध से आश्चर्यजनक परिवर्तन आया।

फिर दिल्ली के डाक्टर श्रीराम जी और उनके

सपुत्र के महक भरे जीवनों का वृतांत बताया। इन जीवनियों को बताते हुए वह बहुत भाव विभोर हो रहे थे। उन्होंने बताया कि ऐसा जीवन दान दुनियां में और कोई हस्ती नहीं दे सकती।

फिर उन्होंने अन्त में अपने जीवन का वर्णन किया कि देवात्मा के सम्बन्ध ने उनके भीतर क्या परिवर्तन पैदा किया है। वह शुक्रगुज़ारी से भरकर आंसू बहा रहे थे।

अन्त में माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी सभापति जी के जीवन परिवर्तन के एक पक्ष का बहुत स्पष्टता से वर्णन किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि हमें अनुभव करने की आवश्यकता है कि परम पूजनीय भगवान का सम्बन्ध हमारे लिए जान और प्राण का सम्बन्ध है, इसलिए यह सम्बन्ध परम आवश्यक है। हमारी मुख्य वस्तु का सच्चा रक्षक है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

22 तारीख शाम 4.00 बजे :-

पब्लिक लैक्चर

वक्ता :- श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान।

सभापति :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

भजन के गान के बाद सभापति जी ने वक्ता का परिचय करवाते हुए बताया कि यह M.A. (Pol. Science) हैं। संस्कृत, विशेष रूप से वेदों की विशेष जानकारी रखते हैं। देव समाज में आने से पहले आर्या समाज में संध्या और हवन करवा कर अपने आपको बहुत बड़ा धर्मवान समझते थे। इन्होंने 2 नौकरियों के बाद पैंशन प्राप्त की। देव समाज में आकर नशे, मासांहार, रिश्वत छोड़ दी। बहुत, विशेष ईमानदारी का जीवन व्यतीत किया। इनके पीछे से आने वाले अफसर ने रिश्वत लेकर उस सीट को कलंकित नहीं किया। इनको देव समाज के ऊँचे पद से हटाया गया, तो भी जो दान का 5 लाख देने का वादा किया था, उसे पूरा किया।

फिर चौहान साहिब ने बताया कि मैं अपने आपको बहुत धर्मवान समझता था। संध्या करवाने का बहुत अभिमान था। मैंने कृतज्ञता का नाम तक नहीं सुना था, यह तो क्या पता होना था कि कृतज्ञता मेरे भीतर है कि नहीं। मुझे जो कुछ मिला है, देव समाज की कृपा से मिला है।

भगवान देवात्मा ने देखा है कि दुनियां में पाप की लीला क्यों हैं? उससे निकलने के उपाय खोजे। उन्होंने फरमाया कि मनुष्य सुख अनुरागी है, सुख प्राप्ति के लिए ही पाप और अपराध होते हैं। इस सब से मनुष्य जाति को बचाने के लिए देव समाज की स्थापना की।

देव धर्म की पहली विशेषता है देव समाज की स्थापना। कई महान लेखकों की भविष्य बानियां हैं जिन्होंने मानवता के लिए नये धर्म की आवश्यकता को बताया है।

देव धर्म की दूसरी विशेषता है, धर्म को नेचर के नियमों पर आधारित करना। आत्मा अमर, अजर, अजन्मा वा निर्लेप नहीं है, उन सब मिथ्याओं से मुक्त

करना देव धर्म का मुख्य कारज है।

देव धर्म की असली विशेषता आत्मा का सत्य ज्ञान देना है। आत्मा क्या है, उसके रोग, उसका पतन वा मौत क्या है? उसकी रक्षा कैसे हो सकती है?

अगली विशेषता है कि इसके बानी देवात्मा हैं, जिन्होंने अपना आदर्श जीवन जीकर दिखाया है। अद्वितीय त्याग वा समर्पण किए, सचाई और भलाई को मुख्य रखा, चाहे कितनी विरोधता हुई।

देव धर्म ही बताता है कि उच्च भावों द्वारा किए गए व्यवहार ही सच्चे धर्म की क्रियाएं हैं। उच्च भावों के बिना सम्बन्धों में नर्क है।

देव धर्म के बिना किसी ने पाप की सही परिभाषा नहीं दी। किसी धर्म में हानि परिशोध के सच्चे साधन नहीं बताए जाते। देव धर्म द्वारा परिवर्तित जीवन इसकी Balance Sheet है।

विशेष दिन

23.12.2018 :– सुबह के समय सूर्य उदय होने से पहले आश्रम में सब जनों ने एकत्र होकर भजनों का गान किया, जिसमें केसूपुर की पार्टी ने विशेष रूप से उत्साह दिखाया, जिनके आगे गुरूदेव राज जी जोश से भरकर आगे गा रहे थे। सुबह सूर्य उदय के साथ ही घण्टा बजा और बैंड का प्रोग्राम शुरू हुआ, और कई धर्म सम्बन्धी बैंड की धुन पर नाचने लगे। साथ ही "प्रगटे देवगुरू भगवान, जीवन ज्योति देने वाले" भजन से आश्रम गूंज उठा। ऐसा सुन्दर भजन है कि जिसको गाने से नया जोश भर जाता है और "अलम" साहिब के लिए धन्यवाद का भाव पैदा होता है, जिन्होंने बहुत सुन्दर और श्रद्धा से भरकर भजन बनाए हैं, परन्तु यह एक भजन ही उनकी याद को अमर कर देता है।

भजन के बाद माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने स्टेज पर खड़े होकर सेवक-गण को सम्बोधन किया और सब सेवक गण, अपने परिवार वा सबके परिवारों के महा सौभाग्य का वर्णन किया और हृदय-गत भावों से सबको गुरू के जन्म दिन की मुबारक दी। चारों जगतों के उपकारी इस विशेष दिन पर यू.पी के नगर श्री अकबपुर में उदय हुए। भौतिक सूर्य के साथ अध्यात्मिक सूर्य का उदय होना मनुष्य मात्र का बहुत बड़ा सौभाग्य है। उनका हृदय ब्यान करते हुए धन्य धन्य हो रहा था। उसके बाद बैंड की धुन के साथ बहुत से धर्म सम्बन्धी जोश से भरकर नाचने लगे। कुछ देर तक यह सिलसिला चला। फिर सब सेवक, सेविकाओं ने हार लेकर गुरू के चरणों में भेंट करने के लिए कतार बना ली और गुरू महाराज की छवि के आगे हार रखकर प्रणाम का साधन किया।

एक रात को धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर रात को भी भजनों का गान किया, जिसमें जगदीश जी, गुरूदेव राज जी, डाक्टर जैरथ जी, डाक्टर नवजोत कालरा जी ने भाग लिया। बच्चों की सभा के पश्चात डिंपल जी कालरा ने, धर्मपत्नी डाक्टर नवजोत जी कालरा बहुत मधुर आवाज़ में एक भजन का गान किया।

23.12.2018 – 9.00 बजे सुबह (विशेष सभा) महा सभा :– **भजन :–** अद्वितीय जीवन व्रत धारी, अद्वितीय महिमी है तुम्हारी । **सभापति :–** विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी।

देव स्तोत्र और सहाय प्रार्थना के बाद श्रीमान जी ने फरमाया इस सभा का विषय है भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसके लिए उनका तप और कुर्बानियाँ, धन और जन की अपील। सबसे पहले हमने यह जानना है कि भगवान देवात्मा कौन हैं? और उन्होंने कैसा जीवन व्रत ग्रहण किया है और उनका त्याग क्या है? सभापति जी ने बताया कि जिसको यह समझ नहीं आती कि नेचर क्या? उसके नियम क्या हैं? और विकास क्या है, वह देवात्मा को नहीं समझ सकते। उन्होंने विकास क्रम की व्याख्या की और बताया कि भौतिक जगत में भी विकास हुआ है कोयले से हीरे तक के विकास को बताया। पशुओं का विकास हुआ है। दूध देने वाले पशुओं का विकास हुआ है। मनुष्यों में भी विकास हुआ है। मनुष्यों का शारीरिक, मानसिक विकास बहुत हुआ है। मनुष्यों के हृदयों में भी विकास हुआ है। परोपकारी मनुष्य विकासक्रम में पैदा हुए हैं। सभापति जी ने बताया कि 168 वर्ष पहले आज के दिन ही देवात्मा का जन्म हुआ। बचपन में ही देवात्मा के अन्दर शुभ का, भलाई का अनुराग पैदा हो गया। फिर भगवान के अन्दर 17 – 18 वर्ष की उम्र में सत्य का अनोखा अनुराग पैदा हुआ। पूजनीय भगवान ने खुद बताया कि मेरे अन्दर की इन्हीं गर्भजात विशेषताओं ने मुझे सारी दुनिया से निराला बना दिया। 32 साल की उम्र में भगवान की सभी देव शक्तियाँ पूर्ण हो गयी। इन्हीं शक्तियों ने उनको जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए मजबूर कर दिया। जीवन व्रत ग्रहण करने से पहले भी गुरू महाराज सेवा के काम करते थे, पर उनके अन्दर के प्रबल – भावों ने प्रेरणा की कि नौकरी छोड़ कर जीवन भेंट करो। मिस मेरी कारपेन्टर के पर – उपकार भाव का हाल पढ़कर, महात्मा बुध का जीवन चरित्र पढ़कर मेजर टक्कर की मेम की तकरीर सुनने भगवान के फैसले को पक्का कर दिया। 15 दिसम्बर को भगवान ने जीवन व्रत ग्रहण करने के लिए अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और फिर 20 दिसम्बर को जीवन व्रत ग्रहण किया। 20 दिसम्बर 1882 को जीवन व्रत ग्रहण करने का अनुष्ठान हुआ। इस सभा में भगवान ने दिलों को हिला देने वाला भाव प्रकाश भी किया था, जिसका सभापति जी की तरफ से पाठ किया गया। जीवन व्रत ग्रहण करके और नौकरी से इस्तीफा देकर गुरू महाराज ने महसूस किया कि मैं एक नई दुनियाँ में पहुँच गया हूँ और अपने को आज़ाद महसूस कर रहा हूँ। गुरू महाराज ने इस तरह महसूस किया जिस तरह एक मछली सूखी जमीन से पानी में जाकर महसूस करती है। नेचर के विकासकारी विभाग ने उनको आर्शीवाद दिया। भगवान ने महसूस किया कि मेरा जन्म एक हद तक सफल हो गया। जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद

देवात्मा के जीवन की नई शुरूआत शुरू हो गयी। सभापति जी ने भगवान की वाणी का पाठ करके सुनाया कि भगवान निराला जीवन और जीवन व्रत रखकर कैसे अपनी प्रकृति से उल्ट जीवन रखने वालों के बीच सुखी रह सकते थे? लोगों ने भगवान को शैतान, ठग, झूठा कहा। भगवान के काम को शैतानी काम कहा। हर साल, हर महीने यह विरोधाग्नि बढ़ने लगी। भगवान की विरोधता में सबसे पहले भगवान के सम्बन्ध में श्रद्धा की जगह घृणा का प्रकाश हुआ। भगवान को ठग, प्रवन्चक, खूनी कहकर विरोधता की गयी। भगवान के खिलाफ सिर्फ बोल कर ही नहीं लिख कर, इश्तीहार छाप कर विरोधता की गयी। गुरू महाराज के सेवकों को बाग़ी बनाया। भगवान अपने स्थान पर सभा करते तो विरोधी जन तोड़ फोड़ करते, विरोधियों ने अपनी घृणा के चलते सेवकों के सिर फोड़ दिए, प्रचारकों को डंडों से पीटा गया उनकी किताबें छीन ली गई। कपड़े खून से लथपथ हो गए।

सभापति जी ने भगवान की वाणी को पढ़कर भगवान की विरोधता का ब्यान किया, फिर विलाप के लेख के चंद शब्द पढ़कर हाजरीन के सामने पेश किये। भगवान ने लिखा है कि मेरा दिल, मेरी रूह, मेरा शरीर चूर-चूर हो गया। सन् 1892 से मुकद्दमें शुरू हुए, चंदा सिंह, देव रत्न, धरम पाल, देवानंद, झाँगीराम, गिरधर राय की विरोधता का सभापति जी की तरफ से ब्यान किया गया। इसके बाद कैसे भगवान की जीत हुई, मन्सा राम के पत्र का भी पाठ किया और बताया कि बाहर के लोगों ने भगवान को सताया, भगवान को कृतघ्नों ने सताया, भगवान की संतान ने सताया, भगवान के सेवकों, कर्मचारियों ने भी सताया है।

अंत में सभापति जी ने भगवान की वाणी को पढ़कर धन और जन की अपील की। इसमें बहुत से जनों ने संगरूर, कल्याण और जहां भी सत्संग होगा वहां पहुँचने का वायदा किया। इसके बाद निम्नलिखित जनों ने दान देन की कृपा की :-

दान

श्रीमान बलदेव सिंह जी के परिवार की ओर से लगभग 1,50,000/-रूपये दान प्राप्त हुआ।

1.	डॉ विनोद खेड़ा जी, चण्डीगढ़	25,000
2.	श्री बलवन्त राय जी	5,000
3.	श्री जगजीत सिंह जी	5,000
4.	श्री मेहर सिंह जी	5,000
5.	श्री एस. एम. मदान जी	5,000
6.	डा० नवजोत सिंह जी	5,000
7.	श्री गुरूदेव राज जी	1,000
8.	श्री मनीष कुमार जी, पंचकूला	2,100
9.	श्रीमति अशोका जी, अम्बाला	2,000
10.	श्री कृष्ण चन्द सहाय जी, जयपुर	2,000
11.	श्री भारत भूषण जी, नारायणगढ़	2,000
12.	श्री हरी राम जी	2,000
13.	श्री जागीर सिंह जी	1,000
14.	श्री सुखदेव सिंह जी, गोनेयाना	2,000
15.	श्रीमति सतिन्द्र ढ़िल्लों जी	2,000
16.	श्रीमति सरोज कुक्कड़ जी,चण्डीगढ़	1,600
17.	श्री खेमचन्द जी, राजसिंह पुर	1,500

18.	श्री दूनी चन्द जी	1,500
19.	श्री P.C. दीवान जी, गंगानगर	1,000
20	श्री चमन जी, चण्डीगढ़	1,000
21.	श्री K.C. अग्रवाल जी	1,000
22.	श्री धर्म सिंह जी चौहान	1,000
23.	श्रीमति वीर पाल कौर जी, समराला	1,000
24.	श्री कँवर पाल सिंह, टीसगंज	1,000
25.	श्री B.P. सिंह जी, गंगानगर	1,100
26.	श्री O.P. वर्मा जी	1,000
27.	श्रीमति प्रीतम कौर जी, पटियाला	1,000
28.	रूप ज्वैलर्य, गोनियाना	500
29.	श्री नरेन्द्र चौधरी जी, मेरठ	500
30.	श्री धर्म पाल सैनी जी, अम्बाला	500
31.	श्री सुन्दर लाल जी, मल्लेका	500
32.	श्री बलदेव सिंह जी, मल्लेका	500
33.	श्री प्यारा सिंह जी, गंगानगर	500
34.	श्री धर्मपाल मित्तल जी, अम्बाला	500
35.	श्री सरताज सिंह जी, केसूपूरा	500
36.	श्री दीप चन्द जी, मेरठ	500
37.	श्री ज्ञान चन्द जी, गोनेयाना	500
38.	श्री जगदीश कुमार जी, सिरसा	500

भेट फंड

1.	श्री सुखदेव जी गोनेयाना	1205
2.	श्री सुभाष चन्द जी, गोनेयाना	1000
3	श्रीमति अशोका जी, अम्बाला	1000

विशेष दिन

23.12.2018 :– दोपहर दो बजे बच्चों की सभा रखी गई, जिसमें कुछ बच्चों ने जीवन कथाएं वा भजन गाए और उन्हें ईनाम दिए गए, उसके साथ ही डाक्टर खेड़ा साहिब की Institute के विद्यार्थियों ने बहुत सुन्दर भजनों का गान किया, जो बहुत दिनों से खेड़ा साहिब अपनी निगरानी में तैयार करवा रहे थे। उनके हम बहुत धन्यवादी हैं कि वह बहुत कीमती समय निकालकर और Music वालों का प्रबन्ध करने में बहुत सा धन खर्च करके, बहुत तैयारी के साथ यह भजन प्रस्तुत करते हैं, सब हाजरीन को यह भजन प्रभावित करते हैं, विशेष रूप से "सुरक्षित हूं मैं हे भगवन, तुम्हारे हाथ में आकर, नहीं रक्षा कहीं मेरी, तुम्हारे से परे जाकर।" इसके बाद खेड़ा साहिब का लैक्चर हुआ और रात को सारे आश्रम में रोशनी की गई, जिससे सारा आश्रम बहुत सुन्दर दिखाई देता था।

23.12.2018 शाम 4.00 बजे :–

लैक्चर :– डाक्टर विनोद जी खेड़ा।

सभापति :– श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय :– नेचर में पाप जीवन की कोई मुआफी नहीं

सर्वप्रथम श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बहुत सुन्दर शब्दों में वक्ता का परिचय करवाया, किस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने सराहनीय काम किया है। वह पुस्तकें छापने के लिए धन तो खर्च करते हैं अपना बहुत समय भी देते हैं।

खेड़ा साहिब ने बताया कि सब धर्मों में पाप और पुण्य की परिभाषा अलग अलग है, जबकि परिभाषा एक ही सही होती है। पाप की वैज्ञानिक परिभाषा है :-

"इस नेचर के किसी भी अस्तित्व के रूप या

गुणों को पहले से बदत्तर बनाना या हानि पहुँचाना (इसमें हमारा अस्त्तित्व भी शामिल है) पाप है।"

ईसाई शिक्षा के अनुसार ईसा मसीह में विश्वास करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के सब पाप क्षमा हो जाते हैं। ईसा मसीह पर विश्वास करने वालों ने किस प्रकार कोपरनीक्सि और गलेलियो पर अत्याचार किए, क्योंकि बाईबल के विरूद्ध उन्होंने विज्ञान के आधार पर यह बताया कि सूर्य नहीं, पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमती है, जिसे अब अधिकतर लोगों को यह विश्वास करना पड़ा। हम मिथ्या और पाप अनुरागी इन्सान सचाई भलाई का साथ देने वालों के साथ और कर भी क्या सकते हैं?

इस्लाम धर्म के अनुसार अल्ला के आखरी रसूल मुहम्मद साहिब पर यकीन ले आएंगे तो जब पाप और पुण्य तोले जाएंगे, तो मुहम्मद साहिब अपने पर विश्वास रखने वाले जन के पुण्य के पलड़े पर अपना हाथ लगाकर नर्क की जगह स्वर्ग में भेज देंगे।

हिन्दु धर्म के अनुसार, राम नाम लेने, नदियों आदि में स्नान करने, मन्दिरों के दर्शन करने, जनेऊ आदि चिन्ह धारण करने, तिलक लगाने, मन्त्र जाप करने से सब पाप धुल जाते हैं। इसी प्रकार जैन वा बौद्ध धर्म ने भी पापों से क्षमा के आसान नुसखे बताए हैं।

अब प्रश्न यह है कि जब ऐसे आसान तरीकों से पापों से क्षमा मिल जाए, तो कोई पाप करने से क्यों डरेगा? यही कारण है कि संसार नर्क का नमूना बना हुआ है।

सब धर्मों की शिक्षा भिन्न है, और यदि ईश्वर एक है, तो सब धर्म आपस में क्यों लड़ रहे हैं? ईश्वर उनका समझौता क्यों नहीं कराता? जब हर धर्म का मनुष्य परलोक जाएगा, तो वहां सारे धर्म गुरू वर्तमान होंगे, वह भी आपस में लड़ पड़ेंगे परमात्मा किसे अपना भेजा हुआ दूत मानेंगे।

आप सोचकर देखें कि यदि किसी की कोई जान लेता है और तीसरा व्यक्ति उसको क्षमा करदे, तो क्या यह न्याय होगा? यदि वह ईसा मसीह या किसी और पैगम्बर से क्षमा मांग ले तो यह कहाँ का न्याय है।

ऊपर बताई हुई दलीलों से साफ मालूम होता है कि पाप क्षमा करने की चीज़ नहीं। Philospher William Kingdom Clifford ने अपने लेख में "Ethics of Belief (विश्वास सम्बन्धी नीतिशास्त्र) में लिखा था कि हम जो विश्वास करते हैं, हम वही हैं और उन्होंने हमें सचेत किया :- "किसी भी व्यक्ति के लिए किसी बात पर बिना पर्याप्त सबूतों के विश्वास कर लेना हमेशा, हर जगह और हर एक के लिए गल्त है।"

सीरिया में हो रहे जुल्म, 26/11 मुम्बई में आतंकवादी आक्रमण और इसी प्रकार और खून खराबा हमारे इसी विश्वास के कारण है कि हमारे सब पाप अपने रहबर पर विश्वास करने से क्षमा हो जाएंगे।

भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि मनुष्य के

भीतर की शक्तियों की यह लीला है मनुष्य में भिन्न प्रकार की शक्तियां उससे पाप और अपराध करवाती हैं। मनुष्य में आकर्षण और विकर्षण की शक्तियां हैं।

मनुष्य के भीतर शरीर सम्बन्धी सुख अनुराग हैं :-

1. स्वाद अनुराग, आलस्य अनुराग, नशों की गुलामी, काम अनुराग।
2. अहं सम्बन्धी अनुराग - प्रशंसा, मान, बड़ाई, स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता/नीच घृणा
3. सन्तान सुख, धन सुख अनुराग, मिथ्या विश्वास, हिंसा सम्बन्धी सुख अनुराग ।

इन शक्तियों से झूठ और पाप पैदा होता है। विज्ञान के विकास से पहले जो धर्म सम्बन्धी शिक्षा थी वह सब कल्पना मूलक थी। न केवल धर्म शिक्षा में बल्कि सब प्रकार के अन्य ज्ञान में भी दोष थे।

परम पूजनीय भगवान ने इन पापों से क्षमा का विज्ञान मूलक हल बताया है।

फिर वक्ता ने भगवान देवात्मा ने जो विकास क्रम में देव शक्तियों को प्राप्त किया उन्हें बताया और उनकी आठ विशेषताओं का ज़िकर किया।

इन निराली शक्तियों को प्राप्त होकर भगवान देवात्मा अध्यात्मिक जगत के सूर्य बन गए, जो अपने देव ज्योति में न केवल पापी जनों को उनके पाप दिखाने की क्षमता रखते हैं, बल्कि अपने बल वा तेज से उनके पापों से उद्धार करते हैं। उनके पिछले पापों का सफाया करवा कर उन्हें पवित्र रूप प्रदान करते हैं। इससे भी आगे उपरोक्त नीच अनुरागों से मोक्ष देने और अधिकारी जनों में उच्च भावों अर्थात श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी, न्यायप्रियता और हानि परिशोध आदि भावों को विकसित करने की भी पूर्ण सामर्थ्य रखते हैं।

उनके देव प्रभावों से आए कुछ परिवर्तनों का खेड़ा साहिब ने भाव पूर्वक वर्णन किया और उनकी संस्था की एक लड़की ने श्रीमान डाक्टर हरनाम सिंह जी की संक्षिप्त जीवनी प्रभावशाली शब्दों में बताई कि कैसे उनके उदण्ड रूप को बदला, जो अपनी श्रेणी में पास नहीं होते थे वह आखिरी मैडीकल कालिज की क्लास में बहुत अच्छी पोज़ीशन लेने के योग्य हो गए। जो गन्दे गीत लिखते वा गाते थे, उन्होंने परम पूजनीय भगवान देवात्मा की वर्तमानता में जब अपना बनाया हुआ भजन "हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य तुम हो धन्य" गाया तो महाराज की आंखों से भी अश्रु धारा बह निकली।

इसके बाद खेड़ा साहिब की संस्था के बच्चों ने बहुत ही मधुर सुर-ताल में उपरोक्त भजन का गान किया।

सभापति जी ने माननीय वक्ता का धन्यवाद किया। खेड़ा साहिब ने जिस विद्वता से, परन्तु सरल ढंग से अपने विषय को पेश किया, वह बहुत ही सराहनीय था। पब्लिक बहुत प्रभावित हुई। और कईयों ने इस सभा की पैम्फलिट रूप में छापे जाने की भी माँग की।

सोमवार :– 24 दिस्म्बर, 2018

पहली सभा : प्रात: 09.00 बजे

विषय : सेवकों सेवकाओं का ग्रहण श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। देव स्तोत्र के गान, उसकी व्याख्या के बाद भगवान के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना और सभा की सफलता के लिए हृदय के गहरे भावों के साथ पुरजोर कामना की। तीन सौभाग्यवान जनों को सेवकी की प्रथम श्रेणी में ग्रहण करने का अनुष्ठान हुआ वह तीन सौभाग्यवान आत्मा हैं।

1) श्रीमान निर्मल सिंह B. Tech के छात्र हैं।

2) श्रीमान देवअनुरूप जी सपुत्र श्री जोगिंदर सिंह जी, Mechanical Engineer के छात्र।

3) श्रीमान अक्षित कुमार जी : M.B.A के छात्र हैं। श्रीमान बलबहादुर जी और श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इन तीनों का परिचय कराया और इनके परिवारिक जनों और धर्म सम्बन्धीयों द्वारा इन तीनों सौभागय जनों के बारे में विस्तार से ब्यान किया।

दूसरी सभा : इसके बाद दूसरी सभा भाव प्रकाश की सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जीने करवाई निम्नलिखित जनों ने भाव प्रकाश किए। सभापति जी ने उन सब साथी सेवकों का धन्यवाद किया जो महोत्सव से पहले आए और आखिरी सभा तक रहकर अपना योगदान दिया और सभाओं से लाभ उठाया।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : –श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229,
2716914

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

भाव प्रकाश

श्रीमान निर्मल सिंह जी केसूपुरा नये सेवक (इंजीनियर) :- मैं 10 वर्ष से संगत में आ रहा हूं। मुझे बहुत लाभ हुआ है। 10 वर्ष पहले पहली सभा सुनी थी, इसमें बताया गया था कि मनुष्य को कौन चलाता है? खेड़ा साहिब की संस्था के बच्चों को देखता और सुनता था। मेरा पढ़ने का कोई लक्ष्य नहीं था। खेड़ा साहिब भी पढ़ने के लिए प्रेरणा करते रहते थे, इससे मेरी पढ़ने की इच्छा सतेज हुई। और मैं इस योग्य हो गया कि मुझे इंजनियरिंग में दाखिला मिल गया। यह सब देव समाज की ही कृपा और देन है। सभाएं सुनते सुनते मेरे व्यवहारों में भी अन्तर आ गया। मैं घर में बड़ों का कुछ कुछ सन्मान करने लगा। अपनी मां और बहन की बिमारी में सेवा करने लग गया। अपने पिता के साथ बात भी नहीं करता था। अब मुझे होश मिली है, मैं अपने व्यवहारों को और भी सुधारूंगा। अपनी ग़ल्तियों के लिए क्षमा भी मांगूंगा। इस दर पर आने से बड़ी रक्षा है, इसके साथ जुड़ा रहूंगा, नहीं तो मेरी खैर नहीं।

श्रीमान जगदीश जी :- महोत्सव सम्बन्धी तैयारियों में मेरा अपना बहुत भला हुआ है। मुझे अपनी ग़ल्ती नजर आई हैं। मैं लोगों के साथ सख़्ती से बातचीत करने लग जाता हूं। अपनी बोल बाणी से उन्हें दुख पहुँचाया हैं। (रो रोकर और हाथ जोड़कर) उन सब से मैं तह दिल से क्षमा मांगता हूं। उनके ब्यान से सभा का वातावरण और भी प्रभावदायक हो गया।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना:- प्यारे धर्म सम्बन्धियों। मैं महोत्सव पर आने के लिए कई महीनों से व्याकुल था। मैं 20 तारीख की सुबह ही यहां पहुँच गया था। सभाएं एक से बढ़कर एक थी, बहुत प्रभावशाली थी। मेरा ध्यान इन सभाओं में अपने धन, धरती अनुराग की तरफ गया। अपने लक्ष्य की तरफ भी गया। कुछ भी साथ नहीं जाना, इस पक्ष में रक्षा पानी है। अपनी तरफ ध्यान ले जाने से अपना बड़ा सौभाग्य नज़र आया है। इन नीच अनुरागों से रक्षा पानी है। सब गुणधारियों और सात्विक जीवन-धारियों के गुण चिन्तन पूरी लगन से करता रहता हूं। खेड़ा साहिब के लैक्चर ने कि पापों से कोई मुआफी नहीं, बहुत प्रभावित किया है। अपनी हिन्दी, पंजाबी पत्रिकाओं में अवश्य इसको छापा जाए और प्रसारण किया जाए। सारा मनुष्य मात्र पूजनीय भगवान का मुहताज था, है...और रहेगा। यह मेरा पक्का विश्वास है। मैं शादियों के गन्दे वातावरण में नहीं जाता। अपना नीच और अहंकारी रूप यहां आकर नज़र आया है। मैं किसी को भी कुछ नहीं समझता था। माता-पिता वा दादा, दादी जी के साथ लड़ता, झगड़ता था। उसके लिए अब दुख

महसूस होता है। अपनी धर्म पत्नी के साथ लड़ता था, मेरी माता मेरी पत्नी को कहती थी कि बेटी, तू धन्य है, जो इसके साथ काटती है। अब मेरा व्यवहार सुन्दर हो गया है। इनका सन्मान करता हूं। मेरा यह संग्राम है कि आगे से और बेहतर इन्सान बनूं।

श्रीमान जगीर सिंह जी :– श्रीमान जी बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने हम महा मूर्खों को यह नई दुनिया दिखाई है। भगवान देवात्मा की शक्ति ने मुझे बदल दिया है। उच्च कर्मचारी जनों ने बचाया है। मैं गुरू महाराज और देव समाज को बहुत बुरा देखता था, ऐसे हालात में श्रीमान सुखदेव जी ने मुझे यह दर दिखाया है। इस संगत में आकर पता लगा कि हम पापी और नीच जीवन रखने वाले हैं। महोत्सव का कार्ड मिलने से इतनी खुशी हुई जैसे शादी और बड़े समागम का कार्ड मिला हो, इतनी अधिक खुशी मिली। हम बस में आते हुए खुशी से भरे हुए थे। प्रिंसीपल सरताज सिंह जी हमें भाई अमर सिंह जी का जीवन चरित्र पढ़कर सुनाते रहे, हमें पता भी नहीं लगा कब सफर खत्म हो गया। सभाओं में बैठे हुए मुझे अपने दिल और दिमाग का ईलाज होता हुआ नज़र आया। घर में अपनी पत्नी और बच्चियों से बुरा व्यवहार करता हूं। इसमें अब सुधार करूंगा। एक बेटी का अधिक पक्षधर हूं। यह बात बहुत बुरी लगी है। खेड़ा साहिब के लैक्चर से बहुत लाभ हुआ है, उनके चरणों में झुकता हूं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी (ढाणी मल्लेका, सिरसा):– पहले मुझे कुछ नज़र नहीं आता था। अब मेरे घर में स्वर्ग हैं। यह साफ नज़र आता है। यह मेहर सिंह जी की मदद से यहां पहुँचा हूं। मेरा पुत्र एक रिश्तेदार की सेवा करके आया, आप खर्च किया, इससे बहुत खुशी मिली। ऐसा स्वर्ग घर घर हो, इसके लिए गुरू महाराज को जितना धन्यवाद दूं थोड़ा है।

श्रीमती वंदना जी (गंगानगर) :– आदरणीय श्रीमान जी, अब से वायदा करती हूं कि हर महोत्सव में आया करूंगी। मेरी नराज़गी अपने पति से थी, तो भूल गई कि भगवान से तो नाराज़ नहीं होना और कोई दूरी नहीं बनानी है।

डाक्टर जैरथ साहिब, देहरादून :– मेरा भी महोत्सव पर आकर बहुत भला हुआ है। अपनी कमी दिखाई दी है, परन्तु उसको क्यों नहीं प्रगट कर सकता? अहं अनुराग ऐसा करने नहीं देता। इस वातावरण में आकर सोच बदलती है, बाहर जाकर फिर उल्टी दृष्टि हो जाती है। उच्च वातावरण में आकर अपनी कमीयां देखने में सहायता मिलती है। मैं अपनी गुणवान पत्नी, जो मेरा बहुत ख़्याल रखती हैं, उनकी अच्छाई को देख नहीं सकता, उनको गर्म होकर बोल जाता हूँ। मैं उसके लिए उनसे क्षमा मांगता हूँ। आगे से ख़्याल रखूंगा।

श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी और श्रीमान ईश्वर सिंह जी हमारे बहुत बड़े उपकारी हैं। उनकी

ज़ोरदार प्रेरणा से मेरे पिता जी का पढ़ना सम्भव हुआ। हमारा परिवार कहां से कहां पहुँच गया। पिता जी के चरित्र निर्माण में श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी का हाथ है। दादी जी केवल पिता जी की पढ़ाई के लिए 2 रूपये महीना ही दे सकती थी। उन उपकारियों के आगे सिर झुक रहा है।

श्रीमती जैरथ जी ने भी कर्मचारियों को उनके घर सत्संग रखने की प्रार्थना की।

श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा :– शुक्रवार को जब हम बस लेकर केसूपुरा से आए, तो श्रीमान जगदीश जी ने हमारा पुरजोर स्वागत किया। लंगर का प्रबन्ध भी कमाल का था, बहुत उत्तम सेवा पाई। मेरी बेटी, दामाद और रिश्तेदार मेरे कहने पर यहां आए, उन्हें भी बहुत लाभ हुआ। चार पुस्तकें भी लेकर गए। हमारी बस पूरी भरी हुई नहीं थी, बहुत से धर्म सम्बन्धी और साथी नहीं आए। इस कमी को दूर करेंगे और पूरी बस भरकर लाएंगे। जो इस दर पर भला हुआ है, वह और कहीं सम्भव नहीं।

श्रीमान अनिल जी :– मुझे यह नज़र आया है कि बचपन से ही मेरे में आलस्य अनुराग भरा हुआ है। स्वाद अनुराग और काम अनुराग भी नज़र आया है। जिससे हानि उठाने के सिवा कुछ नहीं हुआ। अहं अनुराग भी बहुत है। यह चारों नीच अनुराग ही बहुत बढ़ चढ़ कर हावी हैं। गुरू महाराज रूहानी सर्जन हैं। मैं नीच अनुरागों से मुक्त होना और उच्च अनुराग पैदा करना चाहता हूं। ऐसी ज़ोरदार प्रेरणा मिली है। बार बार यह इच्छा प्रबल हो रही है।

श्रीमान जलधर जी :– क्षमा चाहता हूँ कि इस महोत्सव पर जिस प्रकार सेवाकारी होना चाहता था, नहीं हो सका। परलोक में उपकारी जीजी (माता विद्यावती जी खेड़ा) जी भी दुखी हो रही होंगी। उन्होंने मेरे परिवार को बहुत प्यार दिया है। हमारी बहुत सेवा की। मेरा लड़का इंजनियरिंग कर रहा है और लड़की बी. एड. कर रही है। यह सब इस परिवार की कृपा है। बहुत लाभ हुआ है। बच्चों के लिए भी कोशिश करूंगा कि वह भी सत्संग से लाभ उठाएं।

श्री रमेश जी (स्थानीय सेवाकारी) :– सबको सत्य देव की जय। इस ऊँची और सच्ची संगत को लाख लाख बधाई। इस सत्संग से मुझे भी लाभ होने लगा है। मुझे विश्वास है कि और भी लाभ होगा। बहुत सुन्दर और जोशीले अन्दाज में एक गीत गाया।

डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों जी प्रिंसीपल :– इन सभाओं में आकर अपनी बहुत कमीयां नजर आई हैं। मैं बहुत बीमार हो गई थी। मेरे भाईयों, बहन जी ने, मेरे पुत्र और पुत्रवधू ने बहुत सेवा करके मुझे बचा लिया। मुझे अपने अन्दर का गुस्सा कम करने की प्रेरणा मिली है। मैंने समाज की कदर नहीं की। अब लगातार ग्रन्थों का पाठ करूँगी। यहां आकर उपकारियों की लाईनों की लाईने सामने आने लगती हैं। सेहत ठीक होने पर संगरूर सत्संग में अवश्य जाऊंगी।

श्री धर्मपाल जी शर्मा :- आप कई वर्षों से सत्संगों से कल्याण, मल्लेका वा महोत्सव पर आकर लाभ उठाते रहे हैं। उनके बैंक मैनेजर दामाद और बेटी का शराब ने घर बर्बाद कर रखा था। उन्होंने पुस्तकें पढ़कर वा सत्संग सुनकर बहुत लाभ उठाया। वह घर उजड़ने से बच गया। उन्होंने संगरूर सत्संग में आकर लाभ उठाने का प्रण किया। और सत्संगों में भी बढ़ चढ़ कर आने की इच्छा प्रगट की।

समय बहुत हो गया था। एक बजे के करीब। सभापति जी ने महोत्सव की सफलता के लिए परम पूजनीय भगवान वा सहायकारी शक्तियों, सभा करवाने वालों, भजन गाने वालों, लंगर, दफतर की सेवा करने वालों, पुस्तकों को बेचने, पानी गर्म करने वालों का धन्यवाद किया। देव आरती के गान के साथ यह महा-उत्सव समाप्त हुआ। संगरूर में 23-24, 25 फरवरी के सत्संग का ऐलान किया।

शुभ संग्राम
चण्डीगढ़ में आरम्भिक दिन

24.11.2018 को चन्द धर्मसम्बन्धियों ने मिलकर 21-डी, साधन मन्दिर में श्रद्धा और उल्लास से भरकर प्रारम्भिक दिन मनाया। श्रीमान जगदीश प्रसाद जी 50 सैक्टर से और श्रीमान चमन लाल जी धर्मपत्नी समेत जीरकपुर से पहुँच गये थे। गुरू महाराज की सुन्दर छवि एक मेज पर शोभामान की गयी और श्रीमान जगदीश जी की रहनुमाई से सबने मिलकर पूजनीय भगवान की छवि के सन्मुख खड़े होकर सबसे पहले हमारे पूजनीय सदगुरू वाला भजन श्रद्धा से भरकर गाया सबके हृदय पाक जोश और खुशी से भर रहे थे। भजन के समाप्त होने पर चार बार जोश से भरकर जै ध्वनि की गयी। इसके बाद दूसरा भजन प्रगटे देवगुरू भगवान वाला गया गया इसे गाते हुए भी धर्म सम्बन्धी भाव विभोर हो रहे थे और महाराज के हजूर में झुक रहे थे। इस भजन के बाद भी जोश से भरकर चार बार जै ध्वनि की गयी। फिर एक ओर भजन "है चारों जगत पुकार रहे जय देवगुरू" का गान किया गया इसे गाते हुए भी धर्म सम्बन्धी उच्च रस से भर रहे थे और अपने सौभाग्य को मानों बहुत महसूस कर रहे थे इसके बाद फिर चार बार जै ध्वनि की गयी। भजनों और जै ध्वनि के बाद फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने आने वाले दिनों और महोत्सव की सफलता के लिए पूजनीय भगवान के हजूर में और उच्च सहायकारियों शक्तियों से सहाय प्रार्थना की और धर्मसम्बन्धियों को श्रद्धा से भरकर इन मुबारक दिनों को सफल करने के लिए हितकर पुस्तकों का पाठ विचार और अन्य साधन करने की प्रेरणा की। और पूजनीय भगवान की जै ध्वनि के साथ पूरी कार्यवाही सम्पन्न हुई। सब धर्म सम्बन्धी पाक खुशी से भरे हुए विदा हुए।

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

चण्डीगढ़ में इतवार को 25.11.208 की सुबह 9.00 बजे चन्द धर्मसम्बन्धी साधन स्थान सैक्टर 21-डी में एकत्र हुए। श्रीमति निशा जी नेपाली जीरकपुर से और श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा देवाश्रम डेराबस्सी से भी आकर शामिल हुए। सबसे पहले सबने बैठकर श्री जगदीश जी की अगुवायी में कुछ महिमा सम्बन्धी भजन गाए जिनमें "देवगुरू भगवान की महिमा गाईये रज-रज के व तारणहारे गुरूदेव हमारे" गाये और हर भजन के बाद जै ध्वनि के नारे लगाए। फिर अर्चन करके खड़े होकर सबसे देव स्तोत्र का गान किया। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भाव-पूर्ण व्याख्या की और बैठ जाने पर क्या सभा की सफलता के लिए, क्या इन दिनों की सफलता और पावन महोत्सव की निर्विघ्न सफलता के लिए सहायप्रार्थना की और किसी ना किसी अंश देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए भी विनम्रता से प्रार्थना की। फिर "बिना तुमरे मेरे सतगुरू नहीं कोई ठिकाना है" भजन का गान किया गया।

मात-पिता दिवस

पाठको से निवेदन है कि इस वर्ष माता पिता दिवस बाल आडोटोरियम, सैक्टर 23 -डी, चण्डीगढ़ में शनिवार, 12 जनवरी, 2019 को मनाया जा रहा है। कार्यक्रम शुरू शाम 3.00 बजे से हो जाएगा।

- सैक्टरी

विशेष सत्संग :

23 , 24 और 25 फरवरी, 2019 संगरूर में रखा गया है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts